स्नातकोत्तर हिन्दी (सम्मान) द्वितीय सतसई

पत्र संख्या - 06

प्रश्न:- बिहारी की सौन्दर्य भावना एवं बहुज्ञता का विवेचना करें ?

उत्तर:- बिहारी श्रृंगार के रससिद्ध कवि हैं। नारी, प्रकृति एवं भाव सौन्दर्य के चितेरे बिहारी की एकमात्र कृति 'बिहारी सतसई' है। मुक्तक शैली में रचित इस कृति में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो सफल मुक्तक काव्य के लिए आवश्यक माने गए हैं।

बिहारी सौन्दर्य के चितेरे हैं। वे सौन्दर्य की सत्ता 'आत्मगत' मानते हैं 'वस्तुगत' नहीं। यह तो देखने वाले की दृष्टि है जो किसी भी चीज को सुन्दर बना देती है। कोई वस्तु अपने में सुन्दर या असुन्दर नहीं होती। मन जिधर और जितनी रुचि दिखाता है, वह वस्तु हमें उतनी ही सुन्दर प्रतीत होने लगती है:-

समै समै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय,
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय॥

नायिका के नेत्र श्रृंगार रस में स्नान किए हुए हैं, उनमें में से श्रृंगार रस टपक सा रहा है। वे नेत्र अपनी स्वाभाविक श्यामता से ऐसे काले हैं कि बिना काजल लगाए हुए भी वे खंजन पंक्षी को लज्जित कर देते हैं जैसे:-

रस सिंगार मज्जनु किए कंजनु भंजनु दैन,
अंजनु हूँ बिना खंजन गंजन नैन॥

नायिका का सुन्दर मुख पूर्णिमा के चन्द्र की भांति प्रकाशित हो रहा है। उसके मुख की आभा के प्रकाश से वहाँ सदैव पूर्णिमा ही रहती है, अतः तिथि जानने के लिए वहाँ तो तिथिपत्र का ही आश्रय लेना पड़ता है:

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास ।
नित प्रति पून्यौं ही रहत आनन ओप उजास ॥

नायक के अंग-प्रत्यंगों की शोभा में नायिका का चित्त इस प्रकार हो गया है जैसे भंवर में पड़ी नाव, जो बार-बार वहीं चक्कर लगाती है और अन्ततः उसमें डूब जाती है:-

फिरि-फिरि चितु उत ही रहतु टुटी लाज की लाव ।
अंग-अंग छवि झौंर में भयौ भौंर की नाव ॥

बिहारी सतसई में नारी सौन्दर्य के साथ-साथ भाव सौन्दर्य एवं प्रकृति सौन्दर्य की छटा विद्यमान है।

नेत्र सौन्दर्य — भौंहनु त्रासति मुख नटति आँखिनु सौं लपटाति ।
ऐंचि छुड़ावति कर इंची आगें आवति जाति ॥

भाव सौन्दर्य के अन्तर्गत बिहारी ने हाव, भाव एवं अनुभाव योजना के द्वारा रमणीय दृश्यों का विधान किया है, यथा प्रथम समागम के अवसर पर नायिका की चेष्टाओं का सौन्दर्य देखते ही बनता है। राधा-कृष्ण की चेष्टाओं, वाक्य विनोद एवं उनमें चलने वाले परिहास का भी सुन्दर चित्रण बिहारी ने किया है।

प्रकृति सौन्दर्य के भी विविध रूप सतसई में उपलब्ध होते हैं। वसन्ती पवन का चित्रण इसकी समस्त विशेषताओं के साथ बिहारी ने हाथी के सांगरूपक से निम्न दोहे में किया है:

रनित भृंग घंटावली झरित दान मधु नीर ।
मन्द-मन्द आवतु चल्यौ कुंजर कुंज समीर ॥

बिहारी की बहुज्ञता

जो कवि जितना शास्त्रज्ञ, पण्डित एवं प्रतिभा सम्पन्न होगा उसकी कविता में उतनी ही व्यापकता, विशदता एवं बहुज्ञता उपलब्ध होगी। बहुज्ञता का अर्थ है विविध विषयों की जानकारी। बिहारी प्रतिभा सम्पन्न कवि होने के साथ-साथ विविध विषयों की जानकारी से सम्पन्न लोक एवं शास्त्र में निपुण कवि थे। उनके द्वारा रचित दोहों में विविध विषयों की जानकारी समाहित है। यह जानकारी एक ओर तो उनके 'लोकज्ञान' का परिचय देती है तो दूसरी ओर विविध शास्त्रों यथा- आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, चित्रकला, इतिहास, पुराण, राजनीति एवं नीतिशास्त्र की जानकारी भी परिचायक है।

1. आयुर्वेद की जानकारी :-

बिहारी ने अपने कई दोहों में आयुर्वेद की जानकारी होने का परिचय भी दिया है। वे जानते थे कि विषम ज्वर का उपचार सुदर्शन-चूर्ण है, जो निम्न दोहे में इस जानकारी का उपयोग 'श्लेष' का समावेश करते हुए किया गया है:-

यह विनसत नग राखि कै क्यों न सुजस जग लेहु,
जरी विषम जुर ज्याइए आए सुदरसन देहु ॥

2. ज्योतिष की जानकारी :-

बिहारी दरबारी कवि थे और जयपुर ज्योतिष का का प्रसिद्ध केन्द्र था। ज्योतिष से सम्बन्धित अनेक 'योगों' का वर्णन बिहारी के दोहों में है। उनकी इन उक्तियों को देखकर यह निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि बिहारी को ज्योतिष की बड़ी अच्छी जानकारी थी। उन्होंने निम्न सोरठे में 'वर्षा योग' का विधान किया है:-

मंगल बिन्दु सुरंग मुख ससि केसर आड़ गुरु।
इक नारी लहि संग रसमय किय लोचन जगत ॥

ज्योतिष में बताया गया है कि यदि चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति ये तीनों किसी एक नाड़ी पर हों तो संसार में घनघोर वर्षा होती है। बिहारी ने इस वर्षा योग को शृंगार के प्रसंग में नायिका पर घटित किया है। नायिका का मुख चन्द्रमा है, लाल रंग की बिन्दी मंगल ग्रह है तथा केसर का पीला तिरछा तिलक बृहस्पति है। इन तीनों ने एक ही स्त्री रूपी नाड़ी का योग पा लिया है इसीलिए नेत्र रूपी संसार प्रेम रूपी जल से युक्त हो गया है। भाव यह है कि जो भी नायिका को देखता है उसके नेत्रों में प्रेम बरसने लगता है।

3. राजनीति की जानकारी :-

बिहारी ने शृंगार वर्णन के अन्तर्गत राजनीति की जानकारी का उपयोग भी किया है। राज्य के अंगों की बात उन्होंने इस दोहे में कही है। चतुर राजा अपने सहायकों की पद वृद्धि कर के सुशासन स्थापित करता है :-

अपने अंग के जानि कैं जोबन नृपति प्रबीन।
तन मन नैन नितम्ब कौ ~~बड़ो~~ बड़ो इजाफा कीन॥

यौवन रूपी राजा ने अपना सहायक समझकर नायिका के स्तन, नेत्र, नितम्ब और मन में बड़ी भारी वृद्धि कर दी है।

4. नीतिशास्त्र की जानकारी :

बिहारी सतसई में नीति के अनेक दोहे हैं, जो उनकी नीतिशास्त्र की जानकारी का प्रामाणिक परिचय देते हैं। वे जानते हैं कि आज इस दुनिया में दुष्टों को पूजा जाता है, भले व्यक्तियों का तिरस्कार होता है। जैसे :-

बसै बुराई जासु तन ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़िए खोटे ग्रह जप दानु॥

5. गणित की जानकारी:
बिहारी ने गणित की अकिंचित जानकारी का प्रयोग भी सतसई में किया है किन्तु एक दो स्थानों पर गणित के सामान्य ज्ञान को देखकर यह कह देना ठीक नहीं है कि बिहारी बहुत बड़े गणितज्ञ थे वे जानते थे कि अंक के आगे बिन्दी लगा देने पर अंक दस गुना हो जाता है, किन्तु स्त्री के मस्तक पर बिन्दी लगा देने से उसका मूल्य अगणित गुना बढ़ जाता है। जैसे —

कहत सबै बैंदी दए आँकु दस गुनो होतु ।
तिय लिलार बैंदी दए अगनित बढ़तु उदोतु ॥

6. लोक सम्बन्धी की जानकारी:
अद्‌भुत प्रतिभा के धनी बिहारी ने लोक का सूक्ष्म निरीक्षण कर उस ज्ञान का उपयोग अपने काव्य में किया है। लोक में प्रचलित आमोद-प्रमोद से वे भली-भांति अवगत थे इसलिए उनकी सतसई में कहीं पतंगबाजी का वर्णन है, तो कहीं कबूतरबाजी का, कहीं चौगान का उल्लेख है, तो कहीं 'आखेट' का।

सरस सुमिल चित-तुरंग की करि-करि अमित उठान,
गोई निबाहैं जीतिए खेली प्रेम चौगान ॥

उन्हें इतिहास पुराण रीतिशास्त्र की भी अच्छी जानकारी थी जिसका परिचय 'सतसई' के दोहों से मिलता है।

स्पष्ट रूप से हम कह सकते हैं कि बिहारी बहुज्ञ थे उन्हें विविध विषयों की अच्छी जानकारी थी जिसका उपयोग उन्होंने अपने काव्य में किया है।

लोकशास्त्र का ज्ञान भी उन्हें था। लोक के रीति-रिवाज, त्योहार, पर्व, खेल आदि का वर्णन भी उनके दोहों में देखा जा सकता है।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZ.)
मो० न० - 8292271041
ईमेल :- benamkumar213@gmail.com

दिनांक
21/07/2020